शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2014

वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्य

डॉ.सुनीता

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, भारत

शोध संक्षेप

वेद विश्व के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। जब शब्द बनने की प्रक्रिया में थे, तब वेद में गंभीर विचार व्यक्त हुए। दुनिया के अनेक विद्वानों ने वेद का गहराई से अध्ययन किया है। सायण का भाष्य प्रसिद्ध है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने सर्प्रथम वेद का अर्थ किया। लोकमान्य तिलक ने वेदों का गंभीर अध्यायन कर अनेक नवीन स्थापनाएं प्रस्तुत की। महर्षि अरविन्द ने वेद के अग्नि सूक्त की वेद रहस्य नामक पुस्तक में व्याख्याएं प्रस्तुत की। संत विनोबा ने तो वेदों का पचास साल तक गहराई से अध्ययन कर उसका सार निकाला। प्रस्तुत शोध पत्र में वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्यों की पड़ताल के गयी है।

प्रस्तावना

विद् धातु से वेद शब्द है जिसका अर्थ ज्ञान है । हम वैदिक धर्मानुयायियों के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं । वेद सब विद्याओं की और वर्तमान, भूत, भविष्यत् के लिए उपयोगी ज्ञान की खान है। वेदों में जिस प्रकार का सूक्ष्म और अतिन्द्रियगोचर ज्ञान है, उस प्रकार का और कहीं नहीं है।1

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, राजनीति जैसे विषयों के जो मुख्य ग्रन्थ हैं, वे सब अपने-अपने विषयों की वेदमूलकता की मुक्तकण्ठ से घोषणा करते हैं ।

अन्य विषयों की तरह वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्यों का भी अभाव नहीं है। वैदिक वाङ्मय का यदि ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें इतिहास लेखन की परम्परा उपलब्ध है, यद्यपि कुछ विद्वानों की धारण रही है कि वेदों में मानवीय इतिहास का अभाव है परन्तु उन्हें यह बात अवश्य मान्य होगी कि किसी भी तथ्य की ऐतिहासिकता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि वह मानवीय है या दिव्य ।

यद्यपि वह सामग्री अस्पष्ट एवं निगूढ रूप में प्राप्त होती है, परन्तु फिर भी उनमें इतिहास का मिश्रण है । वेदों में विभिन्न ऋषियों वसिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व इत्यादि तथा अनेक राजाओं जैसे दिवोदास और सुदास का ऋग्वेद में विवरण प्राप्त होता है।2 वैदिक कालीन इन राजाओं के दस्युओं, शम्बर आदि के साथ हुए युद्धों का हमें वेदों से पता चलता है। दासयुद्ध एवं दशराज्ञ युद्ध वैदिक वाङ्मय के ऐसे तथ्य हैं जिनके परिणामस्वरूप सप्त-सिन्धु के बिखरे हुए जनपद पुनः एकत्रित हो सकें तथा दस्यु अत्याचार समाप्त हुए । यजुर्वेद में शिवजी के धनुष, हाथी की छाल उनका निवास आदि का पुराणों की तरह उल्लेख प्राप्त होता है।3 इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे इतिवृत्तात्मक आख्यान भी वेदों में मिलते हैं

जो इतिहास से सम्बद्ध हैं - जैसे अंगिरा द्वारा कृत्य में भूल, नाभानेदिष्ट के द्वारा भूल में सुधार, आदित्य और अंगिरा में कलह, ऋभुओं द्वारा तप करके सोमपान का अधिकार प्राप्त करना, ऐतशमुनि द्वारा ऐतशप्रलाप का दर्शन, इन्द्रमहाभिषेक के समान राज्याभिषेक करवाने वाले राजाओं का वर्णन इत्यादि।4 जैमिनीय एवं ताण्ड्य महाब्राह्मण में कौसल एवं वैदेह जनपद (1.336) तथा सौदान्त जाति के अस्तित्व का पता चलता है तो उपनिषदों में मुख्य रूप से छान्दोग्य उपनिषद् में नारद तथा सनत्कुमार वृतान्त तथा इन्द्र विरोचन आख्यान भी इतिहास प्रसिद्ध है।5 इसके अतिरिक्त पुरूरवा-उर्वशी, सरमा-पणि संवाद सूक्त, सुदास-विश्वामित्र के कथानक, इन्द्र-अहल्या, इन्द्र-वृत्त के आख्यान भी ऐतिहासिक हैं तो ऐतरेय ब्राह्मण में शुन:शेप तथा राजा हरिश्चन्द्र की जानकारी मिलती है, वहीं अष्टम पंचिका में चक्रवर्ती राजाओं के महाभिषेक का प्रसंग मिलता है । सामवेद के द्वितीय अध्याय की सप्तमी दशति में इन्द्र के द्वारा ऋषि दधीचि के शिर की हड्डियों से असुरों को पराजित करने का वर्णन आया है। दधीचि का यह अंग विशेष शर्यणावत् (कुरूक्षेत्र) में पाया गया था।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि वैदिक वाङ्मय के द्रष्टा ऋषियों का मुख्य उद्देश्य मानव मात्र के लिए अध्यात्म की शिक्षा प्रदान करना था। परन्तु ज्ञान के इन प्रसंगों में स्वतः ही उस काल की घटनाओं का भी मिश्रण होता रहा। यही कारण है कि इतिहास की वे सभी घटनाएं एक निश्चित कालक्रम के अनुसार नहीं मिलती। परन्तु कालक्रम की निश्चितता के अभाव में न तथ्यों की ऐतिहासिकता या उनकी सत्यता पर सन्देह करना उचित प्रतीत नहीं होता। अतः ज्ञात होता है कि वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध हैं।

सन्दर्भ :

1 पूना प्रवचन, पृ. 44, स्वामी दयानन्द का वेदविषयक 5वां व्याख्यान

2 ऋग्वेद 4.1, 7.83

3 यजुर्वेद 3.61,

4 ऐ. ब्रा. अ 39-ख. 7

5 छान्दोग्य 8.7.10